

## Chapter-11: अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार

**पृष्ठ प्रदेश : -**

- वह क्षेत्र जो इसकी सेवा करता है तथा इससे सेवा प्राप्त करता है बन्दरगाह का पृष्ठप्रदेश कहलाता है।
- पृष्ठ प्रदेश की सीमाओं का सीमांकन मुश्किल होता है क्योंकि यह क्षेत्र सुस्थिर नहीं होता।
- अधिकतर मामलों में एक पत्तन का पृष्ठ प्रदेश दूसरे पत्तन के पृष्ठ प्रदेश का अतिव्यापन कर सकता है।

**भारत के व्यापार की दिशा :-**

- भारत के व्यापार की दिशा में रोचक परिवर्तन हुआ है। संयुक्त राज्य अमेरिका जो 2003 - 2004 में भारत का सबसे बड़ा व्यापार साझेदार था 2011 - 2012 में वह खिसक कर तीसरे स्थान पर आ गया।
- 2016 - 17 में भारत का अधिकतम आयात असियन देशों के साथ है।
- भारत इसके अतिरिक्त पश्चिम यूरोप के देशों यू.के., बेल्जियम, इटली, फ्रांस स्विटजरलैण्ड आदि के साथ महत्वपूर्ण व्यापारिक सम्बन्ध बनाये हुये है।
- कनाडा, रूस, एशिया व अफ्रीकी देशों के साथ भी भारत के निरन्तर व्यापारिक सम्बंध है।
- भारत के न्यूनतम व्यापारिक संबंध (2016 - 17) अफ्रीका से है।

**भारत के आयात संघटन के बदलते प्रारूप :-**

- 1950 एवं 60 के दशक में खाद्यान्नों की गंभर कमी के कारण खाद्यान्न, पूंजीगत, माल, मशीनरी आयात की प्रमुख वस्तुएँ थी।
- 1970 के दशक में खाद्यान्नों के आयात का स्थान उर्वरक एवं पेट्रॉल में ले लिया।
- मशीन एवं उपकरण, विशेष स्टील, खाद्य तेल तथा रसायन मुख्य रूप से आयात व्यापार की रचना करते है।
- पेट्रोलियम तथा इसके उत्पाद के आयात में तीव्र वृद्धि हुई।

- निर्यात की तुलना में आयात का मूल्य अधिक है ।

#### **भारत के निर्यात संघटन के बदलते प्रारूप :-**

- परंपरागत वस्तुओं के निर्यात में गिरावट आई , यथा काजू , दालों आदि । पुष्प कृषि उत्पादों ताजे फलों , समुद्री उत्पादों तथा चीनी आदि के निर्यात में वृद्धि दर्ज गई है ।
- वर्ष 2016 - 17 के दौरान विनिर्माण क्षेत्र ने भारत के कुल निर्यात मूल्य में अकेले 73.6 प्रतिशत की भागीदारी अंकित की ।
- अयस्क एवं खनिजों के निर्यात में आकस्मिक कमी दर्ज की गई ।

#### **भारत के विदेशी व्यापार की विशेषताएँ :-**

- भारत का विदेशी व्यापार सदा ही प्रतिकूल रहा है ।
- आयात का मूल्य निर्यात के मूल्य से सदा ही अधिक रहा है । विश्व के सभी देशों के साथ भारत के व्यापारिक संबंध है ।
- वस्त्र , अयस्क व खनिज , हीरे आभूषण तथा इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएँ भारत के मुख्य निर्यात हैं । पेट्रोलियम हमारे देश का सबसे बड़ा आयात है ।

#### **अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वायु परिवहन की भूमिका :-**

- अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में वायु परिवहन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता
- वायु परिवहन द्वारा लम्बी दूरी तक ले जाने के लिये उच्च मूल्य वाले या नाशवान सामानों को कम से कम समय में ले जाने व निपटाने में सुविधा होती है ।
- हवाई अड्डे : - वर्तमान समय में देश ने 12 अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे तथा 112 घरेलू हवाई अड्डे हैं । जैसे - दिल्ली , मुम्बई , चेन्नई , कोलकाता , गोवा आदि ।

#### **अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से देश कैसे लाभ प्राप्त करते हैं :-**

- आज की जटिल अर्थव्यवस्था से बड़े से बड़ा राष्ट्र भी पूर्णतया आत्मनिर्भर नहीं हो सकता है । प्रत्येक देश में कुछ वस्तुएं उसकी आवश्यकता से अधिक है तो कुछ वस्तुएं कम होती है ।
- इस प्रकार प्रत्येक देश अपनी आवश्यकता से कम वस्तुएं आयात करता है तथा अधिक वस्तुओं का निर्यात करता है , जिससे सभी देशों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके ।
- किसी देश की आर्थिक उन्नति उसके अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर काफी हद तक निर्भर करती है ।

### महत्वपूर्ण पत्तन :-

भारतीय बंदरगाह के साथ कुछ भारतीय बंदरगाह इस प्रकार हैं :-

#### कांडला पत्तन :-

- यह बंदरगाह कुच्छ की खाड़ी के प्रमुख पर स्थित है । इस प्रमुख बंदरगाह का मुख्य उद्देश्य देश के पश्चिमी और उत्तर - पश्चिमी बंदरगाहों की जरूरतों को पूरा करना है और मुंबई बंदरगाह पर दबाव को कम करना है ।
- यह बंदरगाह मुख्य रूप से बड़ी मात्रा में पेट्रोलियम और पेट्रोलियम उत्पादों और उर्वरकों को प्राप्त करने के लिए बनाया गया है ।
- कांडला बंदरगाह पर दबाव कम करने के लिए , वाडिनार नामक एक अपतटीय टर्मिनल भी विकसित किया गया है ।
- सीमा के सीमांकन में भ्रम के कारण , एक बंदरगाह का हिंडलैंड दूसरे के साथ ओवरलैप हो सकता है ।

#### मुंबई पत्तन :-

- यह एक प्राकृतिक बंदरगाह और भारत का सबसे बड़ा बंदरगाह है ।
- इस बंदरगाह का स्थान मध्य पूर्व , भूमध्यसागरीय देशों , उत्तरी अफ्रीका , उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों से सामान्य मार्गों के करीब है , जहां देश के विदेशी व्यापार प्रमुख हिस्सा होता है ।

- यह बंदरगाह 20 किमी की लंबाई और 54 बर्थ के साथ 6 - 10 किमी की चौड़ाई के साथ एक बड़े क्षेत्र में विस्तारित है और इसमें देश का सबसे बड़ा तेल टर्मिनल है ।
- इस बंदरगाह के मुख्य केंद्र हैं मध्य प्रदेश , महाराष्ट्र , गुजरात , उत्तर प्रदेश और राजस्थान के कुछ हिस्से ।

### जवाहरलाल नेहरू पत्तन :-

यह उपग्रह बंदरगाह न्हावा शेवा में स्थित है । इसे मुंबई बंदरगाह पर दबाव से राहत देने के लिए विकसित किया गया था । • यह भारत का सबसे बड़ा कंटेनर पोर्ट है ।

### मर्मगाओ पत्तन :-

- यह जुआरी मुहाना के प्रवेश द्वार पर स्थित है जो गोवा में एक प्राकृतिक बंदरगाह है । 1961 में जापान को लौह - अयस्क निर्यात को संभालने के लिए इसकी रीमॉडेलिंग के बाद इसे महत्व मिला ।
- कोंकण रेलवे के निर्माण ने अपने भीतरी इलाकों का विस्तार किया , उदाहरण के लिए कर्नाटक , गोवा , दक्षिणी महाराष्ट्र अपने भीतरी इलाकों का गठन करते हैं ।

### न्यू मंगलौर पत्तन :-

- इसका उपयोग मुख्य रूप से लौह - अयस्क और लौह सांद्रता और उर्वरकों , पेट्रोलियम उत्पादों , खाद्य तेलों , कॉफी , चाय , लकड़ी की लुगदी , रतालू , ग्रेनाइट पत्थर , गुड़ आदि के निर्यात के लिए किया जाता है ।
- यह कर्नाटक में स्थित है जो इसका प्रमुख केंद्र है ।

### कोच्चि पत्तन :-

- यह बंदरगाह 'अरब सागर की रानी ' के नाम से प्रसिद्ध है ।
- यह एक प्राकृतिक बंदरगाह है और वेम्बानद कोयल के सिर पर स्थित है । कोच्चि बंदरगाह स्वेज - कोलंबो मार्ग के करीब स्थित है ।

- यह केरल , साउथे - कामकट और दक्षिण - पश्चिमी तमिलनाडु की जरूरतों को पूरा करता है ।

#### कोलकाता पत्तन :-

- यह बंगाल की खाड़ी से 128 किमी अंतर्देशीय हुगली नदी पर स्थित है । यह बंदरगाह अंग्रेजों द्वारा विकसित किया गया था क्योंकि यह कभी ब्रिटिश भारत की राजधानी थी ।
- इस बंदरगाह ने विशाखापट्टनम , पारादीप और उपग्रह बंदरगाह , हल्दिया जैसे अन्य बंदरगाहों को निर्यात के मोड़ के कारण अपना महत्व खो दिया है ।
- यह हुगली नदी में गाद जमा होने की समस्या का भी सामना कर रहा है , जो समुद्र से लिंक को बाधित करता है ।
- इसके भीतरी इलाकों में उत्तर प्रदेश , बिहार , झारखंड , पश्चिम बंगाल , सिक्किम और पूर्वोत्तर राज्य शामिल हैं ।
- यह हमारे पड़ोसी देश जैसे कि नेपाल और भूटान को भी बंदरगाह की सुविधा प्रदान करता है ।

#### हल्दिया पत्तन :-

- यह कोलकाता से 105 किमी नीचे की ओर स्थित है ।
- इसका निर्माण कोलकाता बंदरगाह पर भीड़ को कम करने के लिए किया गया है ।
- यह लौह - अयस्क , कोयला , पेट्रोलियम , पेट्रोलियम उत्पादों और उर्वरकों , जूट , जूट उत्पादों , कपास , और यार्न , आदि जैसे बल्क कार्गो को संभालता है ।

#### पारद्वीप पत्तन :-

- यह बंदरगाह महानदी डेल्टा में स्थित है और यह कटक से लगभग 100 किमी दूर है ।
- इसका सबसे गहरा बंदरगाह होने का लाभ है , इस प्रकार यह बहुत बड़े जहाजों को संभालने के लिए सबसे उपयुक्त है ।

- यह मुख्य रूप से लौह - अयस्क के बड़े पैमाने पर निर्यात को संभालता है ।
- ओडिशा , छत्तीसगढ़ और झारखंड इसके भीतरी इलाकों का गठन करते हैं ।

#### विशाखापट्टनम पत्तन :-

- यह आंध्र प्रदेश में स्थित एक भूमि पर आधारित बंदरगाह है ।
- यह एक चैनल द्वारा समुद्र से जुड़ा हुआ है जो ठोस चट्टान और रेत के माध्यम से काटा जाता है ।
- लौह - अयस्क , पेट्रोलियम और सामान्य कार्गो जैसे विभिन्न वस्तुओं को संभालने के लिए एक बाहरी बंदरगाह विकसित किया गया है ।
- इस बंदरगाह के लिए आंध्र प्रदेश मुख्य पहाड़ी इलाका है ।

#### चेन्नई पत्तन :-

- चेन्नई का कृत्रिम बंदरगाह पूर्वी तट पर सबसे पुराने बंदरगाहों में से एक है इसे 1859 में बनाया गया था।
- तट के पास उथले पानी के कारण, यह बड़े जहाजों के लिए उपयुक्त नहीं है।
- तमिलनाडु और पुदुचेरी इसका एक भीतरी इलाका है ।

#### Q. पत्तनों को " अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रवेश द्वार " क्यों कहते हैं?

- समुद्री पत्तन अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इसलिए इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रवेश द्वार कहते हैं।
- पत्तन जहाज के लिए गोदी, सामान, उतारने लादने तथा भंडारण की सुविधाएं प्रदान करते हैं।
- पत्तन अपने पृष्ठ प्रदेशों से वस्तुएं इकट्ठा करने का काम करते हैं, जहां से उन वस्तुओं को अन्य स्थानों पर भेजा जाता है।